हर कोई किसी की मदद कर सकता है

रॉन हॉल और डेनवर

छोटे डेनवर का बचपन बहुत गरीबी में बीता था. उसे स्कूल जाने का मौका नहीं मिला था. उसने एक फार्म पर कड़ी मेहनत की लेकिन वो अपने जीवन से कुछ और चाहता था. जैसे वक़्त गुजरा डेनवर ने एक अलग तरह की ज़िंदगी जीने के लिए बड़े शहर के लिए एक ट्रेन पकड़ी. हालांकि वो जीवन कठिन था, और डेनवर ने एक बेघर व्यक्ति के रूप में कई वर्ष बिताए. लेकिन फिर उसे दो धार्मिक लोग मिले जो डेनवर से बहुत अलग थे—और फिर डेनवर का जीवन हमेशा के लिए बदल गया. दिल को छू लेने वाली इस कहानी को बार-बार पढ़ने में आपको मज़ा आएगा. इस कहानी में एक ही सन्देश है - हर कोई किसी की मदद कर सकता है—छोटे बच्चों की भी!

प्रिय अभिभावक:

करीब दस साल तक डेनवर और मैंने अपनी कहानी सुनाते हुए पूरे अमेरिका की यात्रा की. हमें लगा कि उस कहानी से लोगों का बेघर और गरीब लोगों को देखने और उनके साथ व्यवहार करने का नजरिया बदलेगा. शुरू से ही बच्चे, डेनवर के प्रति आकर्षित हुए.

जब छह साल के एक लड़के ने डेनवर की कहानी सुनी कि कैसे बचपन में डेनवर के पास कोई खिलौना नहीं था, तब उसने अपनी माँ से कहा, "मैं डेनवर को अपना रेड फायर ट्रक देना चाहता हूं." कुछ दिनों बाद, लड़के ने अपना पसंदीदा खिलौना डेनवर को भेंट किया. डेनवर ने उस छोटे से रेड फायर ट्रक को प्रदर्शित किया - उसने उसे एक कांच के बक्से में कला के एक महान कृति जैसे उसे संजोकर रखा.

डेनवर बच्चों से प्यार करता था, और उसकी कहानी को सुनकर कई बच्चे दयालु काम करने के लिए प्रेरित हुए. "हमें एक किताब लिखनी है जिसे छोटे बच्चे पढ़ सकते हैं!" डेनवर ने मुझ से कहा. डेनवर के स्वर्ग सिधारने से कुछ पहले ही हमने इस पुस्तक को समाप्त कर पाए. इस बुद्धिमान और धर्मपरायण व्यक्ति के पास बच्चों के लिए ये अंतिम शब्द थे: "बच्चों से कहें कि कोई इंसान हर किसी की मदद नहीं कर सकता, लेकिन हर कोई, किसी की कुछ-न-कुछ मदद अवश्य कर सकता है?"

डेनवर का सपना है और मेरी भी यही आशा है कि इस पुस्तक को पढ़कर आपके बच्चे करुणा से भरे जाएंगे और अपने आसपास की दुनिया में बदलाव लाने की ज़रूर कोशिश करेंगे.

साभार, रॉन हॉल

कुछ साल पहले तक अमेरिकी लोग काफी संघर्ष कर रहे थे.

उस समय को महामंदी कहा जाता था. परिवारों के पास ज्यादा पैसे नहीं थे. माता-पिता के पास बच्चों के लिए भोजन, दवा या गर्म कपड़े खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे. और नौकरियां नदारद थीं.

उस काल में डेनवर का जन्म जनवरी के एक ठंडे दिन लुइसियाना में एक कपास के बागान में हुआ. वो इतना छोटा था कि उसके दादाजी उसे अपने चोगे की अगली जेब में रख सकते थे.

डेनवर का परिवार एक प्लांटेशन पर, कपास बीनने वाले बटाईदार के रूप में काम करता था. मालिक ने उन्हें प्लांटेशन पर ही एक झोंपड़ी में रहने दिया था. उनके पास बिजली नहीं थी. उनके पास पानी नहीं था. वे जितने गरीब हो सकते थे वे उतने ही गरीब थे.

डेनवर के परिवार के पास कार नहीं थी. कभी-कभी वे खच्चरों द्वारा खींची एक बड़ी वैगन पर सवारी करते थे. लेकिन वे अक्सर पैदल ही चलते थे.

उनके द्वारा खाया गया अधिकांश भोजन उनके बगीचे से आता था - मक्का, आलू, गाजर. दूध, प्लांटेशन की गाय से आता था. क्रिसमस पर, मालिक उन्हें एक सुअर देता था ताकि उनके पास खाने को कुछ मांस हो.

भले ही वो बहुत छोटा था, लेकिन डेनवर अपने परिवार के बाकी सदस्यों के साथ, फार्म पर काम करता था. वो मुर्गियों को दाना देता था. गायों को दूता था और जंगली ब्लूबेरी चुनता था.

उसके पास खिलौनों खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए डेनवर पुराने लकड़ी के तख्तों पर बोतल के ढक्कन लगाकर अपने लिए खेलने का ट्रक बनाता था.

एक दिन डेनवर ने, मालिक के बेटे बॉबी को, एक नई साइकिल पर कच्ची सड़क पर सवारी करते हुए देखा. साइकिल चमकदार और लाल थी! डेनवर ने पहले कभी साइकिल नहीं देखी थी. अब वो खुद के लिए एक साइकिल चाहता था! उसने मालिक से पूछा, "क्या मैं आपके लिए कुछ अतिरिक्त काम कर सकता हूं ताकि मैं बॉबी की तरह बाइक खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा कमा सकूं?"

"डेनवर," मालिक ने कहा, "अगर तुम एक सौ पाउंड कपास बीनोगे तो मैं तुम्हें एक नई बाइक खरीदकर दूंगा."

अगली सुबह सूरज निकलने से पहले ही डेनवर उठ गया और उसने पूरे दिन कपास बीनी. उसके माथे और आंखों से पसीना बह रहा था. जब सूरज ढला तब उसने रुई से भरा अपना बोरा मालिक के खलिहान में लाकर उसे तराज़ू पर रखा. उसका वजन केवल पांच पाउंड था!

दिन-ब-दिन, वो तेज धूप में काम करता रहा और तब तक रुई बीनता रहता जब तक कि उसके हाथ और घुटने सूज नहीं जाते. फिर उसके लिए उठना भी मुश्किल हो जाता था. मालिक के बेटे बॉबी को डेनवर पर बहुत तरस आया और उसने सोचा, मैं भी कुछ कपास बीनूंगा और उसे डेनवर की बोरी में डाल दूंगा. एक दोस्त ने आखिर उसकी मदद की. अंत में डेनवर के पास सौ पाउंड कपास हो गया.

कुछ दिनों बाद मालिक ने कहा, "डेनवर, मेरे पास तुम्हारे लिए एक आश्चर्य है. मेरे साथ आओ. बॉबी नीचे खलिहान में है." जब वे खलिहान में पहुंचे, तो डेनवर ने बड़े दरवाजे को खोला. अंदर एक बिलकुल नई बाइक थी, जो सिर्फ उसके लिए थी! वो चमकदार और लाल रंग की थी, और उसके हैंडलबार पर रबर का एक भोंपू लगा था. डेनवर को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था.

"ओह, धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद!" वो इतनी जोर से चिल्लाया कि वृक्षारोपण के सभी लोग उसकी आवाज़ सुन पाए. डेनवर ने मालिक को गले लगाया. फिर वो और बॉबी एक-साथ अपनी बाइक पर सवार हुए. वो डेनवर के जीवन का सबसे खुशी का दिन था.

अधिकांश बच्चे स्कूल जाते हैं, लेकिन डेनवर स्कूल नहीं जाता था. उसकी बजाए उसे कपास के खेतों में काम करना पड़ता था. डेनवर अपना नाम पढ़ना और लिखना सीखना चाहता था, लेकिन डेनवर के परिवार में कोई पढ़ाई नहीं जानता था.

साल-दर-साल, जब अन्य बच्चे अपना खाने का डिब्बा और किताबों के साथ स्कूल जाते थे, तब डेनवर को वृक्षारोपण पर काम करने के लिए पीछे रहना पड़ता था. वो कपास बीनता था गायों को दूता था और सूअरों और मुर्गियों को खाना खिलाता था.

डेनवर बहुत खुश नहीं था. वो सीखना चाहता था और नई जगहों को देखना चाहता था. वो चाहता था कि उसके पास चीजें खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा हो. लेकिन डेनवर केवल एक बटाईदार का ही काम कर सकता था.
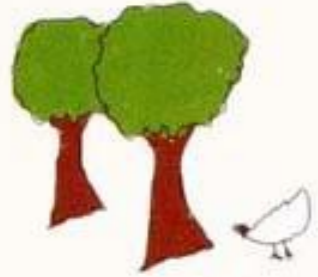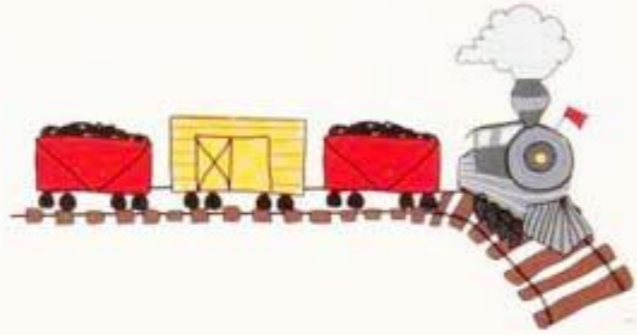
एक दिन, जब डेनवर अपने मालिक स्टोर की ओर जा रहा था. तभी उसने रेल की पटरियों पर एक ट्रेन को रुके हुए देखा. वो ट्रेन कहाँ जाती होगी? डेनवर ने सोचा. वो कूदकर ट्रेन पर चढ़ गया. वो अब दुनिया देखने के लिए तैयार था.

खटखट, क्लिक-क्लैक ट्रेन पूरे दिन और पूरी रात पटरियों पर चलती रही. डेनवर एक बॉक्सकार में सवार हुआ जिसमें कोयला भरा था. वो कोयले की धूल से पूरी तरह ढँक गया. जल्द ही उसकी सुंदर भूरी त्वचा कोयले की तरह काली लग रही थी. जब ट्रेन रुकी, तो डेनवर नीचे जमीन पर उतरा. वह फोर्ट वर्थ, टेक्सास में था.

"यह कितनी बड़ी जगह है!" डेनवर ने कहा. वो सभी ऊंची-ऊंची इमारतों को देखते हुए शहर में घूम रहा था. वहाँ दुकानें थीं और लोग हर दिशा में बहुत तेजी से चल रहे थे. उसने जिसे भी देखा, वो अच्छे और साफ़ कपड़े पहने थे. डेनवर नंगे पांव था और कोयले की धूल से ढका एक चोगा पहने हुए था. उसे यह जानने के लिए आईने की जरूरत नहीं थी कि वो इस शहर में किसी अन्य व्यक्ति की तरह नहीं दिख रहा था.

डेनवर के पास पैसे नहीं थे. उसके पास सोने के लिए जगह नहीं थी. सबसे पहले, उसने भोजन के लिए एक रेस्तरां के पास कूड़ेदान को खोदा. फिर वो एक पुल के नीचे झाड़ियों में पड़े के गत्ते के डिब्बे में जाकर सो गया. बाद में वो नदी में जाकर नहाया.

डेनवर ने एक स्टोर में नौकरी पाने की कोशिश की, लेकिन वो आवेदन पत्र पर अपना नाम तक पढ़ना नहीं जानता था.

"क्या तुम एक बेघर आदमी हो?" दुकान मालिक ने पूछा. डेनवर को उसका मतलब तक नहीं पता था. डेनवर के पास रहने के लिए कोई घर नहीं था, लेकिन उस आदमी ने उसे रहने के लिए एक झोंपड़ी दी थी. अब उसका घर एक गत्ते का डिब्बा था.

लोगों ने डेनवर के साथ अच्छा सलूक नहीं किया. वे उससे बात नहीं करते थे. वो उसे न देखने का नाटक करते थे. लोग कहते कि वो गंदा था और उसके शरीर से बदबू आती थी और वो कूड़ेदान की झूठन खाता था. कोई भी उसकी मदद नहीं करता था.

डेनवर ने एक बेघर इंसान के रूप में रहकर एक लंबा समय बिताया. अकेला, गरीब और भूखा होने ने उसे मतलबी बना दिया.

वो बाहर पुलों के नीचे, पार्क की बेंचों पर, या चर्चों के सामने की सीढ़ियों पर सोता था. उसे उम्मीद थी कि कुछ अच्छे "चर्च जाने वाले लोग" उसकी मदद करेंगे या उसे कुछ खाना देंगे - शायद एक सैंडविच या ठंडे दिनों में एक गर्म कप कॉफी देंगे. लेकिन कभी किसी ने उसे कुछ नहीं दिया.

किसी को भी मेरी परवाह नहीं, वो सोचता था. रात में, वो सितारों से भरे आकाश को देखता था. क्या वास्तव में वहाँ कोई भगवान है, वो सोचता था? क्या वो मुझसे प्यार करता है?

पर भगवान था और वो डेनवर से प्यार करता था. फिर एक बहुत ही अजीब बात हुई. मिस डेबी नाम की एक अच्छी महिला ने एक बेघर आदमी के बारे में एक सपना देखा. "मैंने उसका चेहरा देखा है," डेबी ने अपने पति रॉन से कहा. "मैंने एक बुद्धिमान व्यक्ति को देखा है जिसमें शहर को बदलने की क्षमता है. चलो उस सपने वाले आदमी को ढूंढने की कोशिश करते हैं."

डेबी और रॉन ने हर जगह खोज की, लेकिन उन्हें डेबी के सपने वाला वो आदमी कहीं नहीं मिला.

मिस डेबी और रॉन हर हफ्ते एक अनाथ मिशन में मदद के लिए जाते थे. वे उन्हें खाना और कपड़े देते थे. उन्होंने अनाथ बच्चों को पढ़ना-लिखना भी सिखाया ताकि उन्हें कोई नौकरी मिल सके.

एक रात, जब रॉन और मिस डेबी ने मिशन में रात का खाना परोस रहे थे, तो उन्होंने उस सपने वाले आदमी को देखा! "तुम्हारा नाम क्या है?" उन्होंने पूछा.

"मेरा नाम डेनवर है. मैं एक बुरा आदमी हूं. मुझे अकेला ही छोड़ दें!"

लेकिन मिस डेबी डरी नहीं. "तुम बुरे आदमी नहीं हो," उसने धीरे से कहा. "तुम एक अच्छे आदमी हो. भगवान तुमसे प्यार करता है, और मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ."

डेनवर ने कभी किसी को यह कहते नहीं सुना था, "ईश्वर तुमसे प्यार करता है" उसने कभी किसी को यह कहते नहीं सुना था. उन शब्दों को सुनकर डेनवर का गुस्सा और अकेलापन कुछ कम हुआ. उस रात, जब वो अपने गत्ते के डिब्बे में लेटा तब उसने दयालु आवाज वाली उस अच्छी महिला के बारे में सोचा. क्या वो एक परी है? उसे आश्चर्य हुआ

डेनवर और मिस डेबी दोस्त बन गए. मिस डेबी ने डेनवर को भगवान के बारे में बताया. उसने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया. रॉन ने डेनवर को चित्र बनाना सिखाया. वह डेनवर को कला संग्रहालयों में ले गया. वे एक-दूसरे के दोस्त बन गए.

बहुत जल्द, डेनवर खुश महसूस करने लगा. वो जानता था कि अब वो फिर कभी अकेला नहीं महसूस करेगा. भगवान हमेशा उसके साथ रहेंगे.

मैं बुरा आदमी नहीं हूं, उसने सोचा. मैं एक अच्छा आदमी हूं. भगवान मुझे प्यार करते हैं. भगवान ने मुझे बनाया. भगवान ने मुझे दोस्त दिए हैं.

डेनवर, मिस डेबी और रॉन के प्यार का बहुत आभारी था. वो खुद भी बेघर लोगों की भी मदद करना चाहता था. डेनवर और रॉन ने पूरे अमेरिका की यात्रा की और सभी लोगों से अपने शहरों में बेघर लोगों की मदद करने के अपील की.

लोगों ने अखबारों में डेनवर के बारे में पढ़ा. उन्होंने उसे टीवी पर देखा. डेनवर को राष्ट्रपति से मिलने के लिए व्हाइट हाउस में भी आमंत्रित किया गया!

डेनवर ने लोगों को पुल के नीचे झाड़ियों में गत्ते के डिब्बे में रहने के बारे में बताया. उसने लोगों को मिस डेबी और रॉन की दयालुता के बारे में बताया.

"मिस डेबी उन सभी से बिल्कुल अलग थीं जिनसे मैं कभी मिला था और मैं उन लोगों से बिल्कुल अलग था जिनसे वो कभी मिली थीं," उसने एक बड़ी मुस्कान के साथ कहा- "लेकिन, आखिरकार मुझे पता चला कि वो भी मेरे जैसी ही थीं."

डेनवर ने सीखा था कि कोई इंसान, हर किसी की मदद तो नहीं कर सकता, लेकिन हर इंसान, किसी-न-किसी की मदद ज़रूर कर सकता है. डेनवर अपना शेष जीवन अधिक-से-अधिक लोगों की मदद करने में बिताना चाहता था.

अगली बार जब आप किसी बेघर या गरीब व्यक्ति को देखें, तो डेनवर के बारे में ज़रूर सोचें. याद रखें कि उसने अपने जीवन को कैसे बदला. दयालु मिस डेबी ने उससे कहा, "भगवान तुमसे प्यार करता है, और मैं भी तुमसे प्यार करती हूं."

आप भी ज़रूर किसी की मदद कर सकते हैं.

समाप्त